खाने पर पहरा

पतली पगडंडियां आगे चल कर गांव की चौडी बजरी वाली सड़क बन गई थी। अब जोनाथन जंगलों की बजाय दूर-दूर तक फैले चरागाहों और पकी फसलों से भरे खेतों और फलों से भरपूर बगीचों से हो कर गुजर रहा था। खाने की इतनी सारी चीज़ें देख कर उसे याद आया कि उसने दोपहर में कितना कम खाना खाया था। वह थोडा घूम कर खेत में बने सफेद रंग के एक घर की ओर गया इस उम्मीद में कि वहां उसे पता चल सकेगा कि यह जगह कौन सी है और शायद कुछ खाना भी मिल जाए।

घर के सामने वाले बरामदे में पहुंच कर उसने देखा कि वहां एक युवा औरत और छोटा बच्चा एक दूसरे से लिपट कर रो रहे थे।

जोनाथन को काफी अजीब लग रहा था, उसने पूछा," माफ कीजिएगा, क्या मैं जान सकता हूं कि आप इतनी परेशान क्यों हैं?"

उस औरत ने आंसू भरी आंखें उठा कर जोनाथन को देखा और बोली," मेरे पति को गिरफ्तार कर लिया गया है। "ओह मेरे पति! मैं जानती थी वे उन्हें छोडेंगे नहीं। खाद्य पुलिस ने आखिरकार उन्हें पकड़ ही लिया।"

" मुझे यह सुन कर बहुत दुख हुआ मैम।" क्या कहा आपने, " खाद्य पुलिस?" जोनाथन ने पूछा। उसने प्यार से उस छोटे बच्चे का सिर सहलाते हुए उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा," लेकिन आपके पति को उन्होंने गिरफ्तार किया क्यों?

दांत पीस कर आंसू रोकने की कोशिश करते उस औरत ने जवाब दिया, " अनाज का बहुत अधिक उत्पादन करना उनका अपराध था।"

यह सुन कर जोनाथन चौंक पडा। यह जगह सचमुच ही अजीबोगरीब थी। "क्या अधिक अनाज उगाना अपराध है?"

वह औरत बोली," पिछले साल खाद्य पुलिस ने मेरे पति को निर्देश जारी करते हुए बताया था कि वह कितना अनाज उगा सकते हैं और गांव के लोगों को बेच सकते हैं । उनका कहना था बहुत अधिक अनाज उगाने से उत्पाद की कीमत कम हो जाती है और दूसरे किसानों को नुकसान होता है। उसने

धीरे से अपने होंठ दबाते हुए कहा, " मेरे पति बहुत अच्छे किसान हैं, अकेले मेरे पति द्वारा उगाया गया अनाज गांव के सारे किसानों की मिली जुली उपज से भी ज़्यादा होता था।"

जोनाथन को अचानक अपने पीछे किसी के ठहाका लगा कर हंसने की आवाज़ सुनाई दी। एक भारी-भरकम आदमी खेत से घर की ओर आने वाले रास्ते पर खडा था। मज़ाक उड़ाने के अंदाज में वह बोला," हा! हा! मेरे हिसाब से तो सबसे अच्छा किसान वह है जिसके पास खेत है। क्यों ठीक है न?" जोर से अपना हाथ हिलाते हुए रोती हुई औरत और उसके बेटे को घूरते हुए उस आदमी ने कहा, " चलो अब अपना सामान उठाओ और निकलो यहां से! अधिकारियों की परिषद ने यह जमीन मुझे दे दी है।"

उस आदमी ने सीढ़ियों पर पड़े एक खिलौने को उठाया और जोनाथन के हाथों में पकड़ाता हुआ बोला," मुझे लगता है कि इस औरत को तुम्हारी मदद की जरूरत होगी। निकलों यहां से, अब यह जगह मेरी है।"

वह औरत उठ खड़ी हुई, उसकी आंखे गुस्से से चमक रही थीं, " मेरे पति तुमसे बहुत अच्छे किसान थे, तुम उनके जैसे कभी भी नहीं हो सकते।"

ढीठता से हंसते हुए वह आदमी बोला, " इस बात पर बहस की जा सकती है। हां! यह बात तो माननी पड़ेगी कि उसे खेती करने की अच्छी जानकारी थी। वह इस बात का विशेषज्ञ था कि खेत में कब क्या उगाना है साथ ही उसे अपने ग्राहकों को खुश करना भी आता था। ऐसे देखा जाए तो वह बहुत ही बढ़िया किसान था। लेकिन वह एक बात भूल गया था कि क्या उगाना है और उसकी क्या कीमत होगी, इसका फैसला किसान नहीं बल्कि अधिकारियों की परिषद करती है। और परिषद के नियमों को खाद्य पुलिस लागू करती है।"

तुम लोग परजीवी हो, वह औरत गुस्से में चिल्लाई। खेती करने के तुम्हारे तरीके पुराने और बेकार हैं। तुम जो भी फसल बोते हो उस पर महंगी खाद और बीज की बरबादी करते हो। तुम जो उगाते हो उसे कोई भी नहीं खरीदना चाहता। तुम किसी भी तरह की मिट्टी में फसल उगा देते हो और तुम्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारी सारी फसल ही बरबाद क्यों न हो जाए। तुम जो भी सड़ा-गला अनाज उगाओगे, अधिकारियों की परिषद तुम्हें उसका सरकारी तय मूल्य तो देगी ही। वह तो तुम्हें अपनी सारी फसल नष्ट तक करने के लिए तुम्हें पैसे देते हैं ताकि अनाज की कीमतें ऊंची ही बनी रहें।

जोनाथन ने दुखी होते हुए सोचा, " यानी अच्छा किसान होने का कोई फायदा नहीं?"

उस औरत ने जवाब दिया," अच्छा किसान होना एक कमी है। मेरा पति ने इस आदमी की तरह परिषद के अधिकारियों की चापलूसी करने से मना कर दिया। उन्होंने ईमानदारी से फसल उगा कर लोगों को सही कीमत में अच्छी चीज़ बेचने की कोशिश की।"

वह आदमी उस औरत व उसके बच्चे को बरामदे से धकेलते हुए बोला," बस बहुत हो गया, तुम्हारे पति ने तो सालाना कोटा तक देने से मना कर दिया था। कोई भी खाद्य पुलिस के खिलाफ जा कर कानूनी सज़ा से नहीं बच सकता। अब जाओ निकलो मेरी जमीन से।"

जोनाथन ने उस औरत को उसका सामान उठाने में मदद करी। वह औरत और उसका बेटा बहुत धीरे-धीरे चलते हुए अपने पुराने घर से दूर होते जा रहे थे। जब सड़क का मोड़ आया तो उन्होंने एक बार मुड़ कर उस साफ-सुधरे घर व अनाज भंडार को आखिरी बार देखा। जोनाथन ने उससे पूछा, " अब आप लोग क्या करोगे?"

गहरी सांस लेते हुए वह औरत बोली," मैं मंहगा अनाज नहीं खरीद सकती। सौभाग्य से हमारे रिश्तेदार और दोस्त हैं जिनसे मदद मांगी जा सकती है। वरना मुझे अधिकारियों की परिषद से अपनी व बेटे डेवी के लिए मदद की गुहार लगानी पड़ती। मेरे ऐसा करने से परिषद खुश होती, कहते हुए उसकी आवाज़ में कड़वाहट भर चुकी थी।

उसने सामान की एक बड़ी गठरी उठाई और बच्चे का हाथ पकड़ कर बोली, " चलो, डेवी।"

जोनाथन ने अपना पेट पकड़ लिया, अब उसे भूख से ज़्यादा उबकाई आने का सा अहसास हो रहा था।

विचार-विमर्श

- कुछ किसानों को फसल न उगाने के लिए पैसा क्यों दिया गया?
- उससे उपज की कीमतों और उपभोक्ताओं के लिए अनाज की उपलब्धता पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
- इससे गरीब लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
- इससे किस तरह कि निर्भरता को बढ़ावा मिलेगा?
- ऐसा करने से सरकार को क्या फायदा मिलेगा?
- क्या इस तरह के व्यवहार के कोई वास्तविक उदाहरण हैं?
- खाने की चीज़ों पर आयात शुल्क क्यों है?
- बल प्रयोग करने पर न्याय संबंधी कौन से मुद्दे शामिल हैं?

व्याख्या

बहुत सारे देशों में उन किसानों को, जो बहुत अधिकता में अनाज का उत्पादन करते हैं और उन्हें कम दामों पर बाज़ार में बेचते हैं, इसके लिए जुर्माना देना पड़ता है या जेल की सज़ा भी हो सकती है। सरकार की ऐसी आर्थिक नियंत्रण वाली नीतियां व्यक्तिगत अधिकारों का हनन है और निश्चित तौर पर उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ है।

लोग गरीब इसलिए नहीं हैं क्योंकि कुछ किसान बहुत ज़्यादा अनाज पैदा कर रहे हैं। जब अनाज अधिक मात्रा में पैदा होता है तो उससे कीमतें कम होती हैं जिसका फायदा सबके साथ-साथ गरीबों को भी मिलता है। दरअसल लोगों को गरीब बनाया जाता है क्योंकि अच्छे किसानों को ज़्यादा फसल उगाने से रोका जाता है। खेती के काम में इस तरह की रोकटोक सरकारी नियंत्रक इकाइयों, शुल्क व सब्सिडी इत्यादि के जरिए की जाती है। सरकारी नीतियां ऐसी बनाई जाती हैं कि कुशल किसान भी अच्छी खेती करने में रुचि खो देते हैं। एक बार कोई सब्सिडी शुरू कर दी गई तो फिर वह हमेशा बनी रहती है उसे हटाने के बारे में कोई सोचता तक नहीं। सब्सिडी हटाने के लिए तो किसी राजनीतिक नेता को बहुत ही मजबूत इच्छाशक्ति व प्रभाव की जरूरत होगी।

अगर सरकारी दखलंदाज़ी न हो तो बाज़ार मांग ही यह तय करेगी कि किसान कब और कितना उगाएं और उपभोक्ता उस उपज का कितना मूल्य देने को तैयार हैं।

पृष्ठभूमि

दि इकोनोमिस्ट पत्रिका ने एक बार रिपोर्ट दी थी कि अमेरिका में किसानों को कृषि भूमि के एक तिहाई हिस्से पर कोई फसल न उगाने के लिए पैसे दिए गए। नाप कर देखा जाए तो उत्पादन रहित यह कृषि भूमि 650 लाख एकड़ निकलती है, यानी लगभग ग्रेट ब्रिटेन की कुल जमीन के बराबर।

अब भी अमेरिकी किसानों को चुकंदर, प्रून्स और क्रैनबेरी जैसी फसलों को नष्ट करने के लिए पैसे दिए जा रहे है। हैरत की बात है कि यह कोई छुपी हुई बात नहीं है। समाचारपत्रों के पहले पन्ने पर आंधी तूफान या ओलावृष्टि से फसलों को पहुंचे नुकसान की खबर होती है जबकि उन्हीं अखबारों के पिछले पन्नों पर सरकारी अधिकारियों द्वारा कहीं ज़्यादा गुना पैमाने पर किए जा रही खेती की बरबादी के आंकड़े छपे होते हैं। आम नागरिक ये खबरें पढ़ते हैं और मानते हैं कि सरकार यह कदम जनता की भलाई के लिए उठा रही है। जापान और यूरोप की नीतियां इस मामले में सबसे

ख़राब हैं जिनमें यह सुनिश्चित किया गया है कि सस्ते आयात के कारण उनके अपने उत्पादों की बिक्री कम न हों। इनसे खरीदने वालों को नुकसान उठाना पड़ता है।

संदर्भ

डेविड (डेवी) फ्राइडमैन की *दि मशीनरी ऑफ फ्रीडम*, हेनरी हैज़लिट की *इकोनोमिक्स इन अवर लैसन* और एलन बरिस की *लिबर्टी प्राइमर* ये सभी किताबें काफी मददगार साबित हुईं।

कृषि संबंधी अजीबोगरीब नीतियों का वर्णन करने वाली किताबें और लेख उपलब्ध हैं। जिनमें से सबसे उल्लेखनीय जेम्स बोवार्ड की *फार्म फियास्को* है जिसमें खेती सबंधित नीतियों के कारण होने वाली बरबादी, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार का काफी गहराई से विश्लेषण किया गया है।

हीलिंग अवर वर्ल्ड के अध्याय "डिस्ट्रॉइंग दि इनवॉयरमेंट" मैरी रुवार्ट ने जंगल के संसाधनों, पानी और खेती के तरीकों पर सब्सिडी के प्रभावों के बारे में बताया है।

बॉक्स1

चीजों के उत्पादन और उत्पाद दोनों पर ही उत्पादन करने वाले का अधिकार होता है। अपनी मेहनत से उत्पादन करने वाले लोगों से किसी भी तरीके से उनकी उपज लूटना अन्याय है।

------एलन बरिस, *अ लिबर्टी प्राइमर*

बॉक्स2

.....अपनी मेहनत से तैयार चीज़ को खोने का मतलब है कि अपने बीते समय के उस हिस्से को खो देना जिसमें आपने वह चीज़ तैयार की थी।

जोनाथन के मार्गदर्शक सिद्धांत से लिया गया एक अंश

बॉक्स3

वर्ष 1982 में अमेरिकी करदाताओं ने अमेरिकी दुग्ध उत्पादकों द्वारा तैयार लगभग सारा पाउडर वाला दूध, सभी तरह का पनीर और मक्खन खरीदने में 2.3 अरब डॉलर यानी 2,300,000,000 डॉलर खर्च किए।

----------जोहाना न्यूमैन 1983

बॉक्स4

:) " तुम्हारी राय में खेती के साथ दिक्कत क्या है?"

किसान ने जवाब दिया, " हमारे समय में जब हम बात करते थे कि अपनी 60 एकड़ जमीन पर हम क्या उगाएंगे तो हमारा मतलब फसल उगाने से होता था सरकारी कर्ज़ा नहीं।"